



Sh.vinod. Kumar

30 Jul 1986

07:45 AM

Gormi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119296401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30/07/1986
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 07:45:00 घंटे
इष्ट _____: 05:13:20 घटी
स्थान _____: Gormi
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:36:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:30:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:16:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:29:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:58:43 घंटे
सूर्योदय _____: 05:39:40 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:04:45 घंटे
दिनमान _____: 13:25:06 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 12:58:24 कर्क
लग्न के अंश _____: 09:20:29 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: कृतिका - 1
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: गण्ड
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: अ-अश्विनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
 पिता का नाम _____:
 माता का नाम _____:
 जाति _____:
 गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	श्रावण	8
पंजाबी	संवत : 2043	श्रावण	15
बंगाली	सन् : 1393	श्रावण	14
तमिल	संवत : 2043	आदी	15
केरल	कोल्लम : 1161	कर्कदम	14
नेपाली	संवत : 2043	श्रावण	15
चैत्रादि	संवत : 2043	श्रावण	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2043	आषाढ़	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 9
 तिथि समाप्ति काल _____: 12:19:36
 जन्म तिथि _____: 9
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: कृतिका
 नक्षत्र समाप्ति काल _____: 06:15:43 घंटे
 जन्म योग _____: कृतिका
 सूर्योदय कालीन योग _____: गण्ड
 योग समाप्ति काल _____: 10:29:44 घंटे
 जन्म योग _____: गण्ड
 सूर्योदय कालीन करण _____: गर
 करण समाप्ति काल _____: 12:19:36 घंटे
 जन्म करण _____: गर
 भयात _____: 11:14:28
 भभोग _____: 67:31:16
 भोग्य दशा काल _____: सूर्य 4 वर्ष 11 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
 तिथि _____: 1-6-11
 दिन _____: रविवार
 नक्षत्र _____: मघा
 योग _____: विष्कुम्भ
 करण _____: बव
 प्रहर _____: 1
 वर्ग _____: सर्प
 लग्न _____: मेष
 सूर्य _____: कर्क
 चन्द्र _____: मेष
 मंगल _____: सिंह
 बुध _____: वृष
 गुरु _____: कन्या
 शुक्र _____: तुला
 शनि _____: मिथुन
 राहु _____: वृश्चिक

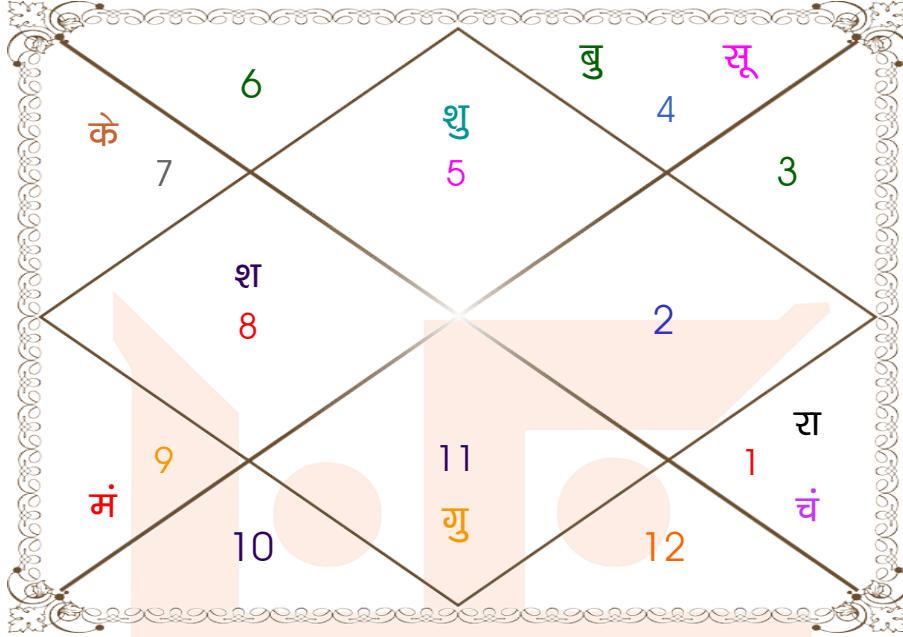


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

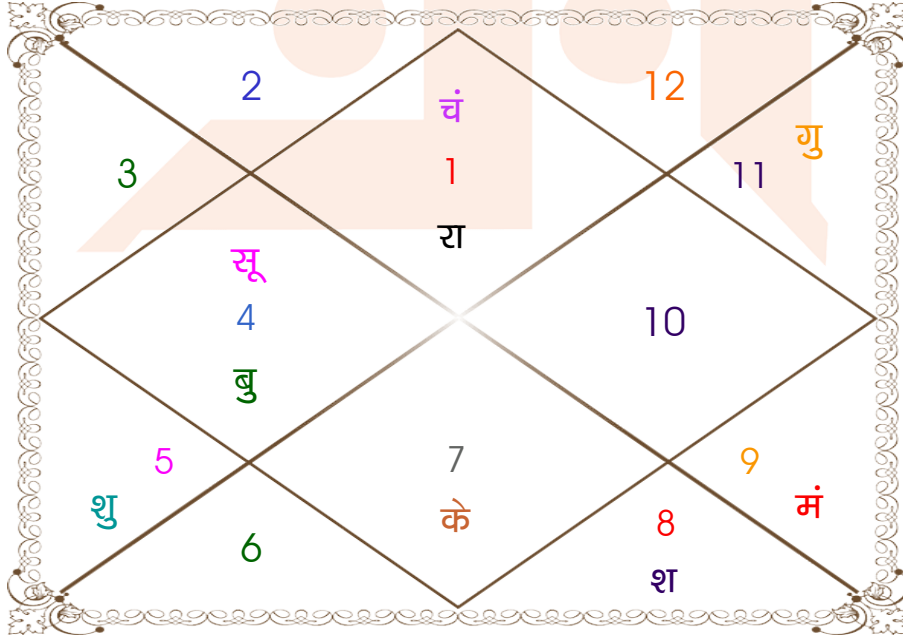


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	रा चं		
गु			बु सू
			शु ल
मं	श	के	

लग्न कुण्डली

	रा चं		
		गु	
बु सू			
ल शु		के	मं
		श	

विंशोत्तरी सूर्य 4वर्ष 11मा 29दि सूर्य

30/07/1986

30/07/2105

सूर्य	29/07/1991
चन्द्र	29/07/2001
मंगल	29/07/2008
राहु	29/07/2026
गुरु	29/07/2042
शनि	29/07/2061
बुध	29/07/2078
केतु	29/07/2085
शुक्र	30/07/2105

योगिनी उल्का 4वर्ष 11मा 29दि उल्का

29/07/2021

29/07/2027

उल्का	29/07/2022
सिद्धा	28/09/2023
संकटा	27/01/2025
मंगला	29/03/2025
पिंगला	29/07/2025
धान्या	28/01/2026
भ्रामरी	28/09/2026
भद्रिका	29/07/2027

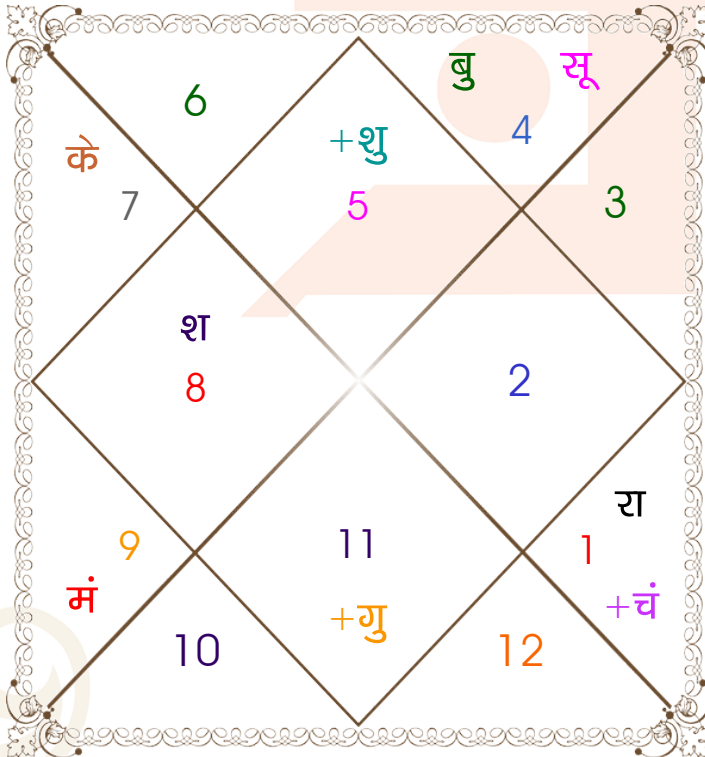
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	09:20:29	317:53:48	मघा	3	10	सूर्य	केतु	शनि	---
सूर्य			कर्क	12:58:24	00:57:23	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	मित्र राशि
चंद्र			मेष	28:53:35	11:52:26	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	मंगल	सम राशि
मंगल	व		धनु	18:57:13	00:10:34	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	मित्र राशि
बुध	व	अ	कर्क	02:49:33	00:22:26	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	शत्रु राशि
गुरु	व		कुंभ	28:42:10	00:03:20	पूर्वाभाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
शुक्र			सिंह	26:52:42	01:05:30	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	शत्रु राशि
शनि	व		वृश्चि	09:26:54	00:00:47	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		मेष	00:47:05	00:01:57	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	00:47:05	00:01:57	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
हर्ष	व		वृश्चि	25:01:42	00:01:22	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
नेप	व		धनु	09:54:57	00:01:17	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	---
प्लूटो			तुला	10:55:53	00:00:30	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
दशम भाव			वृष	08:06:58	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	--

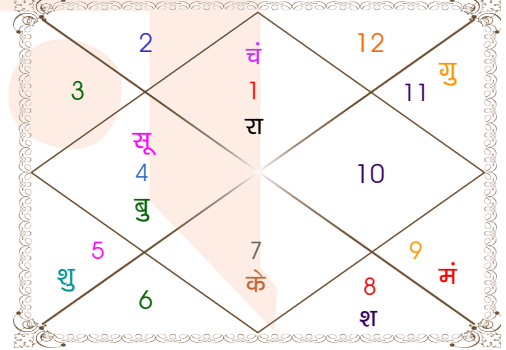
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:04

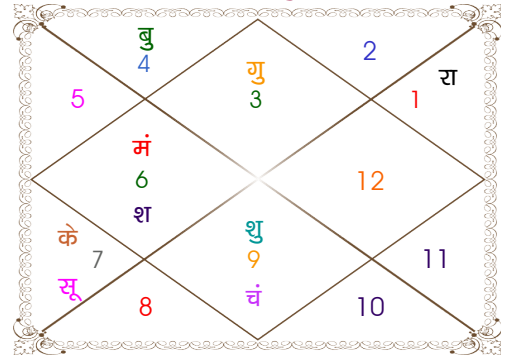
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 24:08:14	सिंह 09:20:29
2	सिंह 24:08:14	कन्या 08:55:59
3	कन्या 23:43:44	तुला 08:31:29
4	तुला 23:19:13	वृश्चिक 08:06:58
5	वृश्चिक 23:19:13	धनु 08:31:29
6	धनु 23:43:44	मकर 08:55:59
7	मकर 24:08:14	कुम्भ 09:20:29
8	कुम्भ 24:08:14	मीन 08:55:59
9	मीन 23:43:44	मेष 08:31:29
10	मेष 23:19:13	वृष 08:06:58
11	वृष 23:19:13	मिथुन 08:31:29
12	मिथुन 23:43:44	कर्क 08:55:59

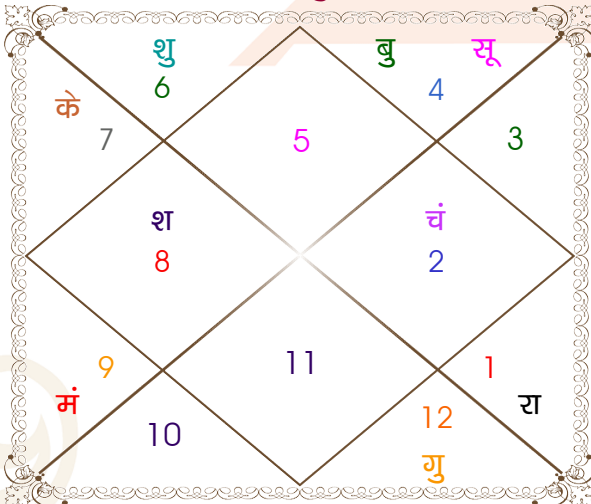
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	09:20:29
2	कन्या	06:01:38
3	तुला	06:09:37
4	वृश्चिक	08:06:58
5	धनु	09:51:56
6	मकर	10:23:53
7	कुम्भ	09:20:29
8	मीन	06:01:38
9	मेष	06:09:37
10	वृष	08:06:58
11	मिथुन	09:51:56
12	कर्क	10:23:53

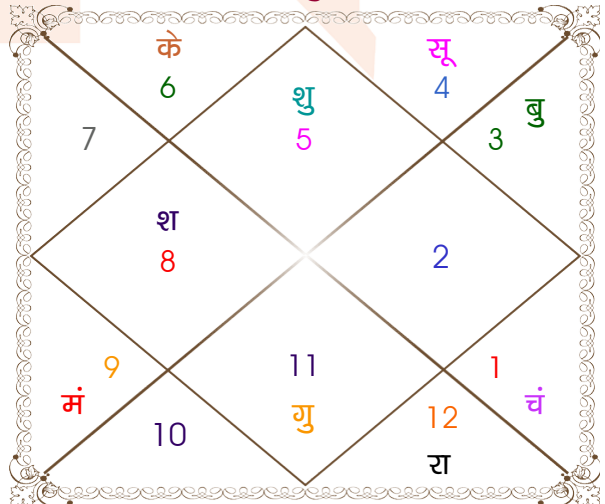
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 11 मास 29 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
30/07/1986	29/07/1991	29/07/2001	29/07/2008	29/07/2026
29/07/1991	29/07/2001	29/07/2008	29/07/2026	29/07/2042
00/00/0000	चंद्र 29/05/1992	मंगल 25/12/2001	राहु 11/04/2011	गुरु 15/09/2028
30/07/1986	मंगल 28/12/1992	राहु 13/01/2003	गुरु 03/09/2013	शनि 30/03/2031
मंगल 22/09/1986	राहु 29/06/1994	गुरु 19/12/2003	शनि 10/07/2016	बुध 05/07/2033
राहु 17/08/1987	गुरु 29/10/1995	शनि 27/01/2005	बुध 28/01/2019	केतु 10/06/2034
गुरु 04/06/1988	शनि 29/05/1997	बुध 24/01/2006	केतु 15/02/2020	शुक्र 08/02/2037
शनि 17/05/1989	बुध 28/10/1998	केतु 23/06/2006	शुक्र 15/02/2023	सूर्य 28/11/2037
बुध 23/03/1990	केतु 30/05/1999	शुक्र 23/08/2007	सूर्य 10/01/2024	चंद्र 30/03/2039
केतु 29/07/1990	शुक्र 27/01/2001	सूर्य 29/12/2007	चंद्र 11/07/2025	मंगल 05/03/2040
शुक्र 29/07/1991	सूर्य 29/07/2001	चंद्र 29/07/2008	मंगल 29/07/2026	राहु 29/07/2042
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
29/07/2042	29/07/2061	29/07/2078	29/07/2085	30/07/2105
29/07/2061	29/07/2078	29/07/2085	30/07/2105	00/00/0000
शनि 01/08/2045	बुध 26/12/2063	केतु 25/12/2078	शुक्र 27/11/2088	सूर्य 16/11/2105
बुध 10/04/2048	केतु 22/12/2064	शुक्र 24/02/2080	सूर्य 28/11/2089	चंद्र 18/05/2106
केतु 20/05/2049	शुक्र 23/10/2067	सूर्य 01/07/2080	चंद्र 29/07/2091	मंगल 31/07/2106
शुक्र 20/07/2052	सूर्य 28/08/2068	चंद्र 30/01/2081	मंगल 28/09/2092	00/00/0000
सूर्य 02/07/2053	चंद्र 28/01/2070	मंगल 28/06/2081	राहु 28/09/2095	00/00/0000
चंद्र 31/01/2055	मंगल 25/01/2071	राहु 17/07/2082	गुरु 29/05/2098	00/00/0000
मंगल 11/03/2056	राहु 13/08/2073	गुरु 23/06/2083	शनि 30/07/2101	00/00/0000
राहु 16/01/2059	गुरु 19/11/2075	शनि 01/08/2084	बुध 30/05/2104	00/00/0000
गुरु 29/07/2061	शनि 29/07/2078	बुध 29/07/2085	केतु 30/07/2105	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 0 मा 0 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल 11/07/2025 29/07/2026	गुरु - गुरु 29/07/2026 15/09/2028	गुरु - शनि 15/09/2028 30/03/2031	गुरु - बुध 30/03/2031 05/07/2033	गुरु - केतु 05/07/2033 10/06/2034
मंगल 02/08/2025	गुरु 10/11/2026	शनि 09/02/2029	बुध 25/07/2031	केतु 24/07/2033
राहु 29/09/2025	शनि 13/03/2027	बुध 20/06/2029	केतु 11/09/2031	शुक्र 19/09/2033
गुरु 19/11/2025	बुध 02/07/2027	केतु 13/08/2029	शुक्र 27/01/2032	सूर्य 06/10/2033
शनि 18/01/2026	केतु 16/08/2027	शुक्र 14/01/2030	सूर्य 09/03/2032	चंद्र 04/11/2033
बुध 14/03/2026	शुक्र 24/12/2027	सूर्य 01/03/2030	चंद्र 17/05/2032	मंगल 24/11/2033
केतु 05/04/2026	सूर्य 01/02/2028	चंद्र 18/05/2030	मंगल 04/07/2032	राहु 14/01/2034
शुक्र 08/06/2026	चंद्र 06/04/2028	मंगल 10/07/2030	राहु 05/11/2032	गुरु 28/02/2034
सूर्य 27/06/2026	मंगल 21/05/2028	राहु 26/11/2030	गुरु 23/02/2033	शनि 23/04/2034
चंद्र 29/07/2026	राहु 15/09/2028	गुरु 30/03/2031	शनि 05/07/2033	बुध 10/06/2034
गुरु - शुक्र 10/06/2034 08/02/2037	गुरु - सूर्य 08/02/2037 28/11/2037	गुरु - चंद्र 28/11/2037 30/03/2039	गुरु - मंगल 30/03/2039 05/03/2040	गुरु - राहु 05/03/2040 29/07/2042
शुक्र 20/11/2034	सूर्य 23/02/2037	चंद्र 07/01/2038	मंगल 19/04/2039	राहु 14/07/2040
सूर्य 07/01/2035	चंद्र 19/03/2037	मंगल 05/02/2038	राहु 09/06/2039	गुरु 08/11/2040
चंद्र 30/03/2035	मंगल 05/04/2037	राहु 19/04/2038	गुरु 24/07/2039	शनि 27/03/2041
मंगल 25/05/2035	राहु 19/05/2037	गुरु 23/06/2038	शनि 16/09/2039	बुध 29/07/2041
राहु 19/10/2035	गुरु 27/06/2037	शनि 08/09/2038	बुध 03/11/2039	केतु 18/09/2041
गुरु 25/02/2036	शनि 13/08/2037	बुध 16/11/2038	केतु 23/11/2039	शुक्र 11/02/2042
शनि 29/07/2036	बुध 23/09/2037	केतु 14/12/2038	शुक्र 19/01/2040	सूर्य 27/03/2042
बुध 14/12/2036	केतु 10/10/2037	शुक्र 05/03/2039	सूर्य 05/02/2040	चंद्र 08/06/2042
केतु 08/02/2037	शुक्र 28/11/2037	सूर्य 30/03/2039	चंद्र 05/03/2040	मंगल 29/07/2042
शनि - शनि 29/07/2042 01/08/2045	शनि - बुध 01/08/2045 10/04/2048	शनि - केतु 10/04/2048 20/05/2049	शनि - शुक्र 20/05/2049 20/07/2052	शनि - सूर्य 20/07/2052 02/07/2053
शनि 19/01/2043	बुध 18/12/2045	केतु 04/05/2048	शुक्र 29/11/2049	सूर्य 06/08/2052
बुध 24/06/2043	केतु 14/02/2046	शुक्र 10/07/2048	सूर्य 26/01/2050	चंद्र 04/09/2052
केतु 27/08/2043	शुक्र 27/07/2046	सूर्य 30/07/2048	चंद्र 02/05/2050	मंगल 24/09/2052
शुक्र 26/02/2044	सूर्य 15/09/2046	चंद्र 02/09/2048	मंगल 08/07/2050	राहु 15/11/2052
सूर्य 21/04/2044	चंद्र 06/12/2046	मंगल 26/09/2048	राहु 29/12/2050	गुरु 31/12/2052
चंद्र 22/07/2044	मंगल 01/02/2047	राहु 25/11/2048	गुरु 01/06/2051	शनि 24/02/2053
मंगल 24/09/2044	राहु 28/06/2047	गुरु 18/01/2049	शनि 01/12/2051	बुध 14/04/2053
राहु 07/03/2045	गुरु 06/11/2047	शनि 24/03/2049	बुध 13/05/2052	केतु 05/05/2053
गुरु 01/08/2045	शनि 10/04/2048	बुध 20/05/2049	केतु 20/07/2052	शुक्र 02/07/2053



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

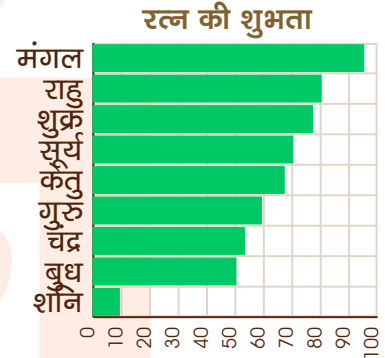


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	सन्तति सुख, भाग्योदय, सुख
गोमेद	राहु	80%	भाग्योदय, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	77%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	70%	कम खर्च, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	67%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	59%	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	53%	भाग्योदय, कम खर्च
पन्ना	बुध	50%	कम खर्च, धनार्जन, धन
नीलम	शनि	9%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	29/07/1991	83%	59%	100%	50%	66%	64%	0%	67%	55%
चंद्र	29/07/2001	77%	66%	95%	56%	59%	77%	9%	67%	55%
मंगल	29/07/2008	77%	59%	100%	25%	66%	77%	9%	67%	73%
राहु	29/07/2026	58%	31%	83%	50%	59%	83%	22%	92%	55%
गुरु	29/07/2042	77%	59%	100%	25%	72%	64%	9%	80%	67%
शनि	29/07/2061	58%	31%	83%	56%	59%	83%	34%	86%	55%
बुध	29/07/2078	77%	31%	95%	62%	59%	83%	9%	80%	67%
केतु	29/07/2085	58%	31%	100%	50%	59%	83%	0%	67%	80%
शुक्र	30/07/2105	58%	31%	95%	56%	59%	89%	22%	86%	73%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/07/1986-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
सम
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

सुख हानि
दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक उन्नति
व्यय



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करावेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे।

इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(29/07/2008 - 29/07/2026)

राहु की महादशा 29/07/2008 को आरम्भ और 29/07/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु की तृतीय भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपकी यात्रा, व्यय, कुछ आर्थिक लाभ, उत्तम शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि मिलेगी, दूर की यात्रा तथा आध्यात्मिकता की ओर झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में शक्ति तथा ऊर्जा होगी। आपको अधिक कार्य और श्रम नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपका शरीर कमजोर हो सकता है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक रोग, विषाणुजन्य समस्या, चर्मरोग, स्नायविक दुर्बलता और अंगों में कमजोरी आदि बीमारियाँ हो सकती हैं। थोड़ी सी सावधानी से इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप सक्रिय तथा आर्थिक अवसर की तलाश में रहेंगे। आपकी भौतिक समृद्धि अच्छी होगी और सारा सुख मिलेगा। आपको शक्ति और अधिकार मिलेगा। आपको सट्टे से सुन्दर लाभ मिलेगा। तृतीय भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको छोटी भाई-बहनों से लाभ मिलेगा, यात्रा और गमनागमन होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए तकनीकी तथा विज्ञान के क्षेत्र, कम्प्यूटर-विज्ञान, राजनीति, कूटनीतिक सेवा, अनुसन्धान, सरकारी सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, दवा, रसायन, बिजली के उपकरण, रत्न, सोना आदि का व्यापार, लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी अचानक पदोन्नति होगी और वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय, यात्रा और परिवर्तन हो सकता है। ये सब आखिरकार लाभदायक सिद्ध होंगे। दशा में प्रगति के साथ स्थित में सुधार आएगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा में आपको जीवन का सभी सुख मिलेगा। आपको भौतिक समृद्धि और सुख मिलेगा तथा जीवन सुखमय होगा। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको सम्पत्ति की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में छोटी लाभदायक यात्रा और मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और अपनी

पसन्द की संस्था में पढ़ाई कर सकते हैं। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इन्जीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, सिविल इन्जीनियरिंग, विधि, दवा आदि के क्षेत्र में आपकी रुचि हो सकती है। आप में नेतृत्व गुण, साहस और दृढ़ता है। अपने आपके रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता है।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे समृद्ध होंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें सम्बंधियों तथा परिवार से लाभ मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, उन्हें मामूली स्वास्थ्य समस्या और कर्मचारियों से लाभ मिलेगा। आपके पिता को धन, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और उनकी यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदार से लाभ, यात्रा और व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को आर्थिक-समृद्धि मिलेगी, उनके अच्छे मित्र होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, सम्पत्ति, यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, कार्यों में सफलता और जीवन का सुख मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा तथा कुछ मामूली बाधा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपका विवाह होगा, साझेदारी से लाभ और जीविकोपार्जन में सफलता मिलेगी जबकि केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, दूर की यात्रा और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। चंद्र की अन्तर्दशा में परिवर्तन और अचानक लाभ या हानि हो सकती है। मंगल की अन्तर्दशा में सन्तान से सुख मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions





महादशा :- गुरु
(29/07/2026 - 29/07/2042)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 29/07/2026 को आरम्भ तथा 29/07/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु का आपके व्यक्तित्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आप संत की तरह धार्मिक होंगे तथा शिक्षित व्यक्ति की तरह ज्ञान की खोज में अपनी पसंद के कारण अध्ययन से जुड़े

रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(29/07/2026 - 15/09/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 29/07/2026 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/07/2026 को प्रारंभ होकर 15/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी; नये मित्र बनेंगे। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। कई माध्यमों से धनलाभ होगा। अध्ययन, अध्यापन, लेखन और प्रकाशन के लिए शुभ समय है। ललित कलाओं और नाटक आदि में रुचि हो सकती है। संचार माध्यमों से लाभ हो सकता है। पारंपरिक साहित्य और कला की ओर अधिक झुकाव होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता की विद्वानों और सत्पुरुषों से मित्रता होगी। उन्हें समाज में सफलता मिलेगी। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उन्हें भूमि और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, उत्तम शिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की वाक्शक्ति उत्तम होगी। भाषण प्रतियोगिता आदि में भाग ले सकते हैं। अध्ययन, लेखन और ज्ञान-विज्ञान में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापारी तरक्की करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, अनाज और हल्दी दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(15/09/2028 - 30/03/2031)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 29/07/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/09/2028 को प्रारंभ होकर 30/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपके पास आर्थिक संसाधन पर्याप्त होंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। आपके कार्य की जनता द्वारा सराहना होगी। अदालत में जीत होगी। प्रत्येक कार्य जिम्मेदारी, दक्षता और सलीके से करेंगे। सफलता प्राप्त करने में थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसे कार्य जिनमें लगन, परिश्रम और दक्षता की आवश्यकता हो, आपके लिए उपयुक्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी का उत्थान होगा। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता सफल रहेंगी; उनकी ज़िम्मेदारी बढ़ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, सुख-सुविधाएं, उत्तम शिक्षा, शत्रुओं का मुकाबला करने की शक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को सफल होने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और प्रसन्न होंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती में मामूली संक्रमण हो सकता है; पेट में दर्द या अन्य तकलीफ से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले तिल, उड़द, चमड़ा और सरसों का तेल दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

